टोंक पहुंचे सचिन, जनता को संबोधित करते समय भावुक हो गए

समर्थकों ने पायलट का शानदार स्वागत किया और जमकर नारे लगाए

टोंक, 4 दिसम्बर (निसं)। राजस्थान विधानसभा चुनाव समाप्त होने के बाद पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट चुनाव जीतने के बाद पहली बार टोंक पहुंचे, जहां सीधे सबसे पहले वे घंटाघर स्थित निर्वाचन कार्यालय पहुंचे जहां उन्होंने उपखंड अधिकारी कपिल शर्मा से मुलाकात की और शर्मा ने जीते हुए उम्मीदवार सचिन पायलट को निर्वाचन पत्र सौंपा।

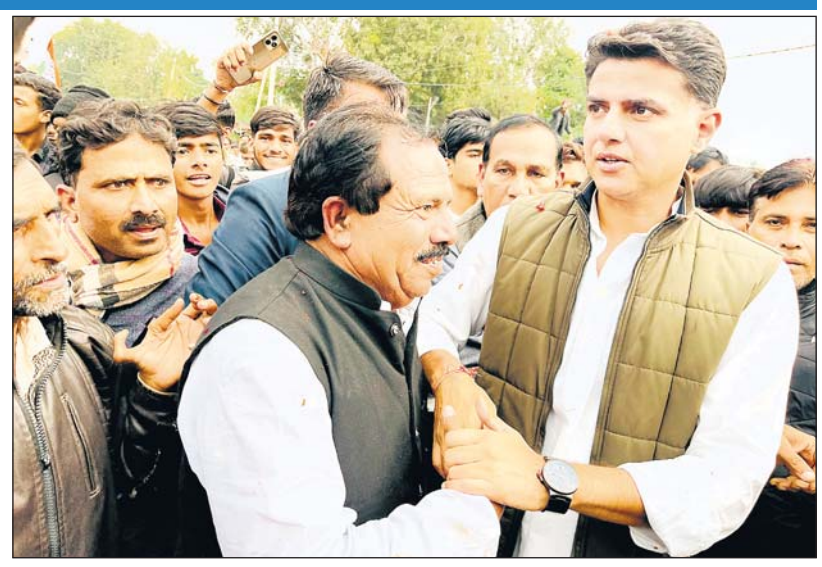

सचिन पायलट टोंक में समर्थकों से मिलते हुए।

■ **पायलट ने कहा हार क्यों हुई यह भूलकर लोकसभा चुनाव के लिए पूरे जोश के साथ आगे बढ़ना है।**

वहां से पायलट सीधे जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय पहुंचकर सभी कांग्रेस के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों को धन्यवाद दिया और अपनी जीत को जनता को सौंपा और कहा कि क्षेत्र की जनता ने मुझ पर भरोसा कर बहुमत से जिताकर एक बार फिर से सेवा का जो अवसर दिया है, मैं इसके लिए जनता को धन्यवाद देना चाहता हूं। पायलट ने कहा कि इस जीत को मैं टोंक विधानसभा क्षेत्रवासियों को अर्पित करते हुए विश्वास दिलाता हूं कि क्षेत्र के विकास में कोई कसर नहीं छोडूंगा और जनता के बीच रहकर पूरे 5 साल विकास कार्य के निरन्तर प्रयास करता रहूंगा।

जिसके बाद कांग्रेस कमेटी के मतदाताओं को आभार व्यक्त करते हुए जिलेभर से आये कांग्रेसजनों को सम्बोधित करते हुए पायलट एक बार भावुक नजर आये। वहीं जिला अध्यक्ष हरिप्रसाद बैरवा ने भी भाषण के दौरान जनता का धन्यवाद दिया और खुद भी भावुक हो गये, आगे उन्होंने कहा कि आने वाले चुनावों के लिए हमें तैयारी करनी होगी, संगठन को साथ लेकर जिले में कांग्रेस की मजबूत स्थिति लाने का प्रयास किया जायेगा। आने वाले समय में चारों विधानसभा सीटों में कांग्रेस की सीटें लाने का प्रयास करेंगे। उनके नेतृत्व में कांग्रेसजनों ने इस अवसर पर 51 किलो की फूलों की माला पहनाकर अपने विधायक पायलट का नारों के साथ जोरदार स्वागत किया।

इस अवसर पर पायलट ने कांग्रेस पार्टी द्वारा हार के कारणों की समीक्षा करने की भी बात कही कहा और आने वाले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को मजबूती से सामना करना होगा, कैसे हारे, क्यों हारे, इस बात को जल्द ही भूलकर आगे आने वाले चुनावों में सभी को मिलकर कार्य करना है।' प्रेस वार्ता के दौरान पायलट ने कहा कि तीन राज्यों में कांग्रेस को आज जो हार का सामना करना पड़ा है, लेकिन हार कम ही मार्जिन से दर्ज हुई है, 2013 में जब में प्रदेश अध्यक्ष था, तो कांग्रेस 21 सीटों पर ही सिमट गई थी, आज हमारे पास तीन गुना से ज्यादा सीटें है, हारे क्यों, इस बात का अभी विश्लेषण किया जाएगा और जल्द ही लोकसभा चुनाव आने वाले है उसी की तैयारी में जी जान से जुटना है, और भाजपा को हराकर बदला लेना है।

कांग्रेस विधायक दल की बैठक मंगलवार को जयपुर में

जयपुर, 4 दिसम्बर (का.प्र.)। राजस्थान में कांग्रेस विधायक दल की बैठक मंगलवार को 11:00 बजे प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय इंदिरा गांधी भवन में बुलाई गई है। बैठक में केंद्रीय पर्यवेक्षक कौन होंगे, क्या परिणाम के दिन आए केंद्रीय पर्यवेक्षक मधुसूदन मिस्त्री और मुकुल वासनिक सहित भूपेंद्र सिंह हुड्डा ही पर्यवेक्षक होंगे या कोई और इस बारे में सूचना नहीं दी गई है।

कांग्रेस विधायक दल की बैठक से ठीक 1 दिन पहले अपने निर्वाचन क्षेत्र टोंक पहुंचे सचिन पायलट ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के ओएसडी लोकेश शर्मा की ओर से दिए गए बयान को लेकर कहा कि यह काफी गंभीर मामला है। क्योंकि मुख्यमंत्री के ओएसडी ने ऐसा कहा है तो पार्टी के नेतृत्व को यह देखना चाहिए कि यह क्या मामला है। झूठ है या सच है, इस मामले में चर्चा की जानी चाहिए। इसी के साथ पायलट ने कहा कि लोकसभा चुनाव से पहले उन्हें लेकर पार्टी क्या सोचती है । क्या जिम्मेदारी देती है, वह हर जिम्मेदारी के लिए तैयार हैं। पायलट ने कहा कि पहले भी पार्टी ने जो जिम्मेदारी दी थी, वह निभाई है और आगे भी निभाएंगे। इसी के साथ राजस्थान में पार्टी की हार को लेकर उन्होंने कहा कि जयपुर और दिल्ली दोनों जगह इस बारे में मंथन होगा।

राजस्थान में अनूठे प्रयोग कर सकती है भाजपा

जैसे उत्तराखंड में हारे हुए पुष्कर सिंह धामी को मु.मंत्री और केशव प्रसाद मौर्य को यू.पी. में उपमुख्यमंत्री बनाया गया था

■ **तो क्या राजस्थान में भी भाजपा आलाकमान किसी हारे हुए नेता पर भरोसा जता सकता है।**

जयपुर, 4 दिसम्बर (का.सं.)। भाजपा को प्रदेश में स्पष्ट बहुमत मिल गया है और प्रदेश नेता अपने स्तर पर जोड़-तोड़ कर रहे हैं। चर्चा है कि लोकसभा चुनाव को देखते हुए पार्टी हाईकमान अनूठा प्रयोग करते हुए पराजित नेताओं को भी बड़ी जिम्मेदारी दे सकता है, जैसे यूपी में केशव प्रसाद मौर्या को हारने के बाद भी उप मुख्यमंत्री बनाया गया था। उत्तराखंड में चुनाव हारने के बाद भी पुष्कर सिंह धामी को मुख्यमंत्री बनाया गया था। चूंकि, जातिगत समीकरण साधने के लिए ये प्रयोग पहले भी हो चुके हैं।

राजस्थान में भी करीब दो दर्जन सीटों पर सतीश पूनिया ने चुनाव प्रचार भी किया था। जहां पर भाजपा को जीत मिली है। राजस्थान, हरियाणा, यूपी, दिल्ली में जाट और किसान को साधने के लिए संघ पृष्ठभूमि के सतीश पूनिया को जिम्मेदारी मिल सकती है, जो विद्यार्थी परिषद, युवा मोर्चा में सक्रिय रहे और 40 साल से भाजपा संगठन में सक्रिय हैं। इस बार के चुनावों में जाट सीटों पर भाजपा को चुनौती मिली है। उसे साधने के लिए यह प्रयोग हो सकता है। यूपी की कई सीटों पर सतीश पूनिया ने प्रचार भी किया है। जहां पर पार्टी को फायदा भी हुआ है। राजस्थान में भाजपा के पास कोई बड़ा जाट और ओबीसी लीडर भी नहीं है। इसे लेकर अब प्रदेश और दिल्ली में सियासी समीकरण बनाये जा रहे हैं। मारवाड़ और मेवाड़ में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति में पूनिया मजबूत पकड़ है। उसका भी लाभ इस बार भाजपा को मिला है। राजधानी जयपुर जिले की आमेर विधान सभा सीट पर भाजपा के हार की कई कहानियां हैं। सतीश पूनिया को यहां पिछली बार 13 हजार से अधिक मतों से जीत मिली थी, पर इस बार उन्हें 9092 मतों से हार मिली है। यहां भाजपा में भारी भितरघात हुआ है। जिसका असर इस चुनाव पर पड़ा है।

संघनिष्ठ सतीश पूनिया किसान, ओबीसी और जाट समुदाय से आते हैं। जिनकी राजस्थान से लेकर यूपी, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली और राजस्थान से सटे उत्तरी गुजरात के किसान वर्ग और मारवाड़ियों में पकड़ होने के साथ एक मजबूत प्रभाव है। लो प्रोफ्राइल लीडर पूनिया के राजनीतिक भविष्य का नया अध्याय भाजपा केन्द्रीय नेतृत्व तय कर सकता है। ऐसे में वर्ष 2024 में लोकसभा चुनाव हैं और देशभर के साथ उत्तर भारत की लोकसभा सीटें भी भाजपा के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं, भाजपा केन्द्रीय नेतृत्व सतीश पूनिया को किस भूमिका में रखना चाहेगा, यह भविष्य के गर्भ में हैं ?

चुनाव नतीजों के कारण इंडिया गठबंधन ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दम पर ही चुनाव लड़ने का फैसला किया जिससे मत विभाजित हुए और भाजपा को लाभ मिला। तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी.) प्रमुख ममता बनर्जी ने आज कहा कि सीट शेयरिंग समझौता ना करने के कारण कांग्रेस की पराजय हुई। उन्होंने जोर देकर कहा कि "कांग्रेस" की हार जनता की हार नहीं है। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भी कांग्रेस की हार पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि जिन क्षेत्रों में क्षेत्रीय पार्टियां मजबूत हैं, वहां उन्हें भाजपा के खिलाफ संघर्ष का नेतृत्व करना चाहिए।

ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल विधानसभा में दिए एक संबोधन में कहा कि "कांग्रेस ने तेलंगाना में जीत दर्ज की है। वह मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में भी जीत सकती थी, लेकिन इण्डिया गठबंधन की सहयोगी पार्टियों के कुछ वोट कट गए। हमने सीट शेयरिंग एग्रीमैंट मतों का बिखरात होने की वजह से हारी।" उन्होंने कहा कि "विचारधारा के साथ-साथ आपकी कोई रणनीति भी होनी चाहिए और सीट शेयरिंग को लेकर अगर कोई समझौता हो जाता है तो फिर भाजपा वर्ष 2014 में सत्ता में नहीं आएगी।"

उन्होंन कहा कि विपक्षी पार्टियों का गठबंधन "इण्डिया" एकजुट होना काम करेगा और अगले वर्ष होने जा रहे लोकसभा चुनावों से पहले अपनी गलतियों में सुधार करेगा। हाल ही सम्पन्न विधानसभा चुनावों में कांग्रेस और "इण्डिया" के घटक दलों ने कई सीटों पर अलग से चुनाव लड़ा था, शायद इसीलिए मतों के विभाजन का फायदा भाजपा को मिला।

मध्य प्रदेश में सीट शेयरिंग को लेकर कांग्रेस की बात अखिलेश यादव की सपा से चल रही थी, लेकिन बातचीत विफल हो गई। मध्य प्रदेश में कांग्रेस की चुनाव कमान संभाल रहे कमलनाथ ने सीट शेयरिंग के प्रश्न को एक बार तो यह कह कर खारिज कर दिया था कि "छोड़ो अखिलेख अखिलेश।" नाथ की इस टिप्पणी ने इण्डिया गठबंधन की वार्ताओं पर ताला लगा दिया। समाजवादी पार्टी के प्रवक्ता मनोज यादव काका ने कहा कि "कमलनाथ जी द्वारा अखिलेश जी के लिए प्रयुक्त किए गए अमर्यादित शब्दों के कारण ही कांग्रेस हारी।" चुनाव परिणामों के बारे में यादव ने कहा कि "यह एक लम्बी लड़ाई है। हमें भाजपा जैसी पार्टी को हराने के लिए बहुत तैयारी करनी होगी। हमें अनुशासन बनाए रखकर उनकी रणनीतियों का मुकाबला करना होगा।"

"इण्डिया" गठबंधन को लेकर उन्होंने कहा कि "हमें वहीं पहुंचना होगा, जहां से हमने शुरुआत की थी। हमारी बात वहां से शुरु हुई थी कि हमें उन पार्टियों का सहयोग करना होगा जो अपने-अपने क्षेत्रों में मजबूत है। वर्ष 2024 के चुनाव ऐतिहासिक होंगे। बदलाव होगा।" कल जब कांग्रेस की आसन्न पराजय के रुझान आने शुरु हुए तब इण्डिया गठबंधन के घटक दलों ने विपक्ष की मुख्य पार्टी कांग्रेस की यह कहकर आलोचना शुरु कर दी थी कि उसने साथ मिलकर चुनाव नहीं लड़ा। जनता दल यूनाइटेड (जद-यू) के के.सी. त्यागी ने कहा कि "कांग्रेस ने इण्डिया गठबंधन की अन्य पार्टियों की अनदेखी की, लेकिन वह स्वयं भी अपने बल पर नहीं जीत पायी।" केरल क मुख्यमंत्री एवं सी.पी.एम. नेता पिनाराई विजयन ने कहा कि हिंदी भाषी राज्यों में भाजपा का मुकाबला करने के लिए साथ मिलकर संघर्ष करना जरुरी है।"

शिव सेना (उद्धव बाला साहेब ठाकरे) के नेता संजय राउत ने कहा कि कांग्रेस यदि इण्डिया गठबंधन के अन्य घटक दलों के साथ कुछ सीटें शेयर कर देती तो मध्य प्रदेश का चुनाव परिणाम भिन्न रहा होगा। एक बड़ी विपक्षी पार्टी के एक सीनियर नेता ने मीडिया से कहा कि ऐसा लगता है इण्डिया गठबंधन में कोई बड़ी सौदेबाजी करने के लिए कांग्रेस चुनाव परिणामों की ही प्रतीक्षा कर रही थी।

क्या रैवन्त रेड्डी होंगे तेलंगाना में कांग्रेस के...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

खबर आई की शपथ ग्रहण समारोह अगले दिन तक के लिए टाल दिया गया क्योंकि कांग्रेस आलाकमान सरकार गठन के बारे में चर्चा करना चाहता है। अब शपथ ग्रहण समारोह मंगलवार को होगा। दिल्ली से और कांग्रेस के सूत्रों से पता चला है कि कांग्रेस आलाकमान ने रैवन्त रेड्डी के नाम पर सैद्धांतिक स्वीकृति दे दी है क्योंकि अधिकांश विधायक रैवन्त को अपना मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं। लेकिन अभी तक आलाकमान की तरफ से औपचारिक घोषणा नहीं हुई है।

निश्चित रूप से रैवन्त रेड्डी सबसे आगे हैं पर अन्य दावेदार भी है जिसमें तेलंगाना कांग्रेस के पूर्व प्रमुख उत्तम कुमार रेड्डी, वरिष्ठ नेता मुल्ला भट्टी विक्रमार्का, रैवन्त रेड्डी ने पूरा दिन होल में विधायकों से चर्चा की। विधायक रात में भी यहीं रहे थे। इस समय दिल्ली पार्टी की मीटिंग चल रही है जिसमें मध्य प्रदेश राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की हार पर मंथन व तेलंगाना में सरकार गठन पर चर्चा की गई। आज शाम के समय रैवन्त रेड्डी को मुख्यमंत्री व भट्टी विक्रमार्का को उपमुख्यमंत्री व दो मंत्रियों को रात आठ बजे शपथ दिलाने की घोषणा स्थानीय नेताओं द्वारा की गई थी पर भट्टी ने जोर दिया या तो वे अकेले उपमुख्यमंत्री बनेंगे या फिर उन्हें यह पद नहीं चाहिए। वे मुख्यमंत्री के पद की पेशकश नहीं किए जाने से नाराज थे। यह स्थिति उत्तम कुमार रेड्डी की थी। उन्होंने कहा अगर उन्हें मुख्यमंत्री नहीं बनाया जाता है तो उनकी पत्नी को मंत्री बना दिया जाए। पर बाद में सारी कवायद रोक दी गई। अब उम्मीद है कि कल शपथ ग्रहण होगा। दिल्ली में कांग्रेसी सूत्रों के अनुसार नेतृत्व रैवन्त रेड्डी के नाम पर सहमत है जिन्होंने पार्टी को खड़ा किया है, पर अक्सर मंजिल मिलते-मिलते दूर हो जाती है। कांग्रेस आलाकमान पर दबाव है कि जल्दबाजी में फैसला ना करे क्योंकि भाजपा और बी.आर.एस. आंखे गड़ाए बैठे हैं कि कोई मौका मिले और वे उसे लपक लें।

कांग्रेस की हार...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वोटिंग पैटर्न और नतीजों में एक स्पष्ट रूझान मिला कि भाजपा व कांग्रेस के बीच मतों का स्पष्ट ध्रुवीकरण हुआ। कांग्रेस भले ही इस चुनाव में हार गई है पर पार्टी ने अपनी संगठन क्षमता और प्रतिबंध जनाधार प्रदर्शित किया है।

भाजपा के राष्ट्रीय विकल्प के रुप में कांग्रेस अगर क्षेत्रीय दलों के साथ समझौते करती है तो इसकी ही ताकत कम होगी। भविष्य को देखते हुए कांग्रेस को इन क्षेत्रों में अपनी ताकत बढ़ानी होगी। इसके लिए पार्टी को ऐसे नेता चुनने होंगे जो उसकी विचारधारा व योजनाएं आम जनता तक पहुंचा सके।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा मैसर्स अरावली प्रिन्टर्स, राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर (राजस्थान) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 65015/96, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34 फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908